भाषाई विविधता हमारी पहचान:दत्तानी

साहित्य महोत्सव 2025 (7 से 12 मार्च)

नाटककार महेश बोले, लेखक शब्दों के कारीगर होते हैं

नई दिल्ली, प्रमुख संवाददाता। कमानी सभागार में आयोजित साहित्योत्सव 2025 के दूसरे दिन शनिवार को प्रसिद्ध नाटककार महेश दत्तानी ने कहा कि लेखक शब्दों के कारीगर होते हैं। हमारे देश की भाषाई विविधता को बचाए रखने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका है।

दत्तानी ने भाषाई विविधता को बचाए रखने के लिए अनुवाद की महत्त्वपूर्ण भूमिका को इंगित करते हुए इसे बढ़ाने पर जोर दिया। अकादमी के अध्यक्ष माधव कौशिक ने कहा कि हमें अकादमी के 70 वर्ष के इतिहास पर गर्व है। किसी भी देश की पहचान भाषाई विविधता को यहां संपूर्ण एकता के रूप में देखा जा सकता है। साहित्यकार को हमारे यहां प्रजापति कहने की परंपरा है, क्योंकि वह समांतर संसार की रचना करता है। हमारे साहित्यकारों की संवेदना की परिधि बहुत व्यापक है और यह साहित्य उत्सव या यह पुरस्कार अर्पण समारोह भारतीय सृजनात्मकता का उत्सव है। अकादमी की उपाध्यक्ष कुमुद शर्मा ने कहा कि रचनाकार एक साधक होता है और अपनी रचना प्रक्रिया में सब कुछ भूल कर कुछ समाज की भलाई के लिए कई रंग बिखेरता है, लेकिन उसमें सर्वश्रेष्ठ रंग मनुष्यता का ही होता है। समारोह में 22 साहित्यकारों को पुरस्कृत किया गया । कन्नड भाषा के लिए पुरस्कृत रचनाकार नहीं आ सके। वहीं बंगला भाषा का पुरस्कार घोषित नहीं किया गया था।